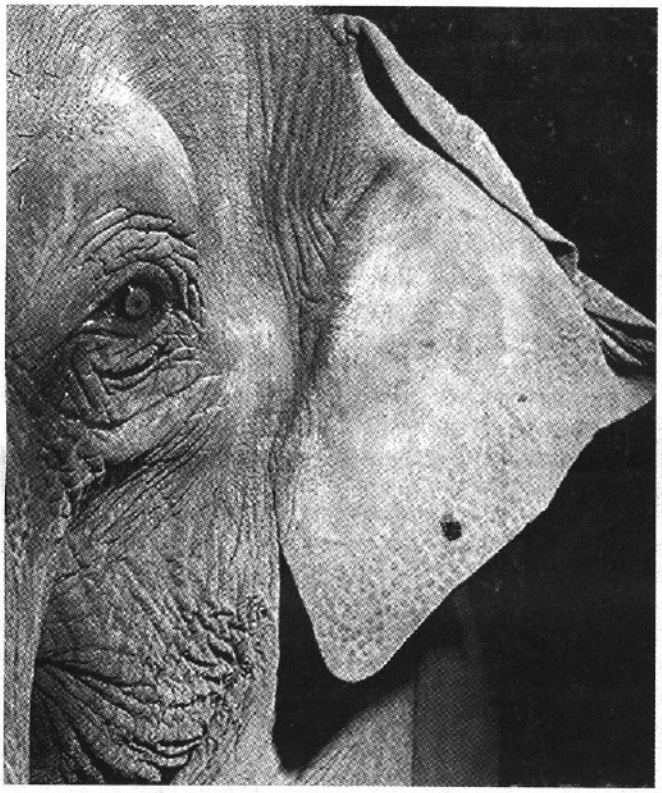

झारखंड में हाथियों का

साथी नहीं, श

झारखण्ड के जंगल दिनोंदिन कटते जा रहे हैं, जिसकी वजह से इन जंगलों में रहने वाले वन्य पशुओं को भारी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है. हाथियों का विचरण क्षेत्र नहीं रह जाने से खामियाजा भी इंसानों को भुगतना पड़ रहा है. हाथियों की वजह से काफी लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है.

अनुराग कश्यप | खबरखण्ड

पैतालिस लोगों का समूह पूरी तरह से चौकन्ना और मुस्तैद दिखता है. 10-12 फुट लंबी और खास तौर से तैयार बांस की लाठियों, नुकीले भालों, तेजधार वाले गड़ासों और केरोसिन तेल में डूबाये गए कपड़ों से तैयार मशालों के साथ. इस समूह का नेतृत्व 37 वर्षीय मंगल सोरेन कर रहे हैं. पूरी रणनीति तैयार है कि कैसे, किधर से और कब हमला करना है? कौन भाला चलाएगा? कौन आग दिखाएगा? यह झारखंड राज्य के दुमका जिले का दुमका-रामगढ़ मार्ग है. आसपास के दर्जनभर गांवों के ग्रामीण जुटे हुए हैं. यहां पहुंचने पर एकदम से धारावाहिक महाभारत के युद्ध दृश्य ताजा हो जाते हैं. वैसे यह भी युद्ध ही है. हां, इस युद्ध में किसी राज्य-साम्राज्य की चाहत नहीं. इस युद्ध का मकसद अपना और अपने परिजनों की जान बचाना है. अपने आशियाने और खेत-खलिहानों की रक्षा करना है. यह युद्ध है हाथियों के खिलाफ. दुमका-रामगढ़ मार्ग पर मिले मंगल सोरेन और उनके साथियों के चेहरे पर पिछली रात का खौफ साफ दिख रहा था. वे लोग बताते हैं कि गुजरी रात कितनी खौफनाक थी और उन लोगों ने किस तरह हाथियों के झुंड से मुकाबला किया था. गांव के अधिकांश घर तहस-नहस हो गए और हाथियों ने गांव के कई घरों में रखे अनाज खा लिए. पूरी रात जागकर ग्रमीणों ने किसी तरह से हाथियों के झुंड को गांवों से भगाया. ग्रामीणों ने बताया कि हाथियों का झुंड अब भी गांव से थोड़ी दूरी पर है. इसलिए वे लोग तैयारी में हैं, ताकि इस बार हमला करने की दशा में हाथियों को कड़ा जवाब देंगे.

वैसे यह हालात सिर्फ दुमका जिले में नहीं, बल्कि पूरे झारखंड में बने हुए हैं. झारखंड के 24 जिलों में दुमका, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़, पूर्वी और पश्चिमी सिंहभूम, चतरा, पलामू, गढ़वा, बोकारो, गिरीडीह समेत एक दर्जन से अधिक जिलों में इंसानों और हाथियों के बीच युद्ध छिड़ा हुआ है. खास तौर से झारखंड के संथाल परगना के सुदूर ग्रामीण इलाकों में तो जंगली हाथियों का काफी आतंक दिखता है. एक अनुमान के अनुसार संथाल परगना प्रमंडल के करीब 50 हजार परिवार हाथियों के आतंक से सीधे तौर पर प्रभावित हैं. गोड्डा के राजेश्वर सिंह कहते हैं कि पहाड़ों-जंगलों से सटे सुदूर ग्रमीण इलाकों में वाशिंदे कभी न खत्म होने वाली दहशत भरी रातों के बीच जीने की आदत डाल रहे हैं. रात-रात भर मशाल और आग जलाकर रतजगा, दिनभर कड़ी मेहनत और हर समय खौफ...शायद यही यहां के लोगों की नियति बन गई है.

झारखंड के सुदूर ग्रामीण इलाकों में मदमस्त गजराजों के स्वच्छ विचरण एवं उनके हमलों से हत और आहतों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है. जंगली इलाकों की निरीह और गरीब जनता जंगली हाथियों के उत्पात से भयाक्रांत है. वन विभाग के अधिकारियों की मानें, तो झारखंड के 24 जिलों में जंगली जानवरों से प्रभावित रहने वाले संवेदनशील गांवों की संख्या 593 है. झारखंड राज्य गठन के बाद से लेकर पिछले वर्ष 2008 की समाप्ति तक सूबे में मुआवजे के तौर पर जंगली जानवरों के हमलों से घायल हुए लोगों और मारे गए लोगों के परिजनों-आश्रितों को मुआवजा और मकान, फसल और पशुधन नुकसान के एवज में 1192.12 लाख का भुगतान किया जा चुका है. वन विभाग के आंकड़े बताते हैं कि झारखंड के गठन के बाद से जून 2008 तक राज्य के विभिन्न इलाकों में अलग-अलग घटनाओं में जंगली जानवरों ने 653 लोगों को मौत की नींद सुला दिया. वन विभाग के अधिकारियों के मुताबिक जंगली जानवरों की ओर से इंसानों को मारने की 99 प्रतिशत घटनाओं को हाथियों ने अंजाम दिया. बीता वर्ष 2008 इस लिहाज से सबसे खतरनाक रहा. वर्ष 2008 के अप्रैल से जून 2008 के तीन महीनों के अंदर जंगली जानवरों ने झारखंड के विभिन्न इलाकों में 26 लोगों को मार डाला था. झारखंड के खूंटी में आठ, राजधानी रांची के पूर्वी इलाके में पांच, बोकारो में सात, गढ़वा, हजारीबाग और चतरा में एक-एक लोगों की मौत जंगली जानवरों के हमले से हुई. झारखंड बनने के बाद से लेकर वर्ष 2008 तक जंगली जानवरों की ओर से मौत के घाट उतारे गए 653 लोगों के आश्रितों और परिजनों को वन विभाग ने 598.08 लाख रुपये मुआवजे के मद में दिए. राज्य बनने के बाद से वर्ष

विशेष : भितरघातियों से पसीने छूट रहे उम्मीदवारों के

ा खौफ, युद्ध जैसे हालात

शत्रु बने हाथी

क्यों बिगड़े हालात?

झारखंड यानी झाड़ जैसे जंगलों का खंड. जंगल और पहाड़ झारखंड की पहचान रहे हैं. और जब जंगल और पहाड़ होंगे, तो फिर वहां जानवर कैसे नहीं रहेंगे? झारखंड के जंगलों-पहाड़ों में जंगली जानवरों खास तौर से हाथियों का वास भी इसके प्राकृतिक सौंदर्य में चार चांद लगाता रहा है. हजारों वर्षों से झारखंड के मूल निवासी आदिवासियों की विभिन्न प्रजातियां अपने जीविकोपार्जन के लिए जंगलों-पहाड़ों पर निर्भर रही हैं. इसके साथ ही हाथियों समेत अन्य जंगली जानवरों का ठिकाना जंगलों में रहा है. इसके बावजूद आज जैसे गंभीर हालात कभी पैदा नहीं हुए थे. जानकारों की मानें, तो झारखंड राज्य गठन के बाद यहां सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो गया. आबादी बढ़ने लगी. जंगल कटने लगे. हाथियों के आशियाने छोटे पड़ते अथवा उजड़ते गए, फिर हाथी करते भी तो क्या? गांवों में हाथियों के झुंड के घुसने के पीछे एक बड़ा कारण उनके कॉरिडोर का प्रभावित होना है. कॉरिडोर यानी हाथियों के स्वतंत्र विचरण का इलाका. जब तक कॉरिडोर सुरक्षित था, तब तक हाथियों के झुंड झारखंड के जंगलों से होते हुए पड़ोस के बिहार, पश्चिम बंगाल और छत्तीसगढ़ के जंगलों में चले जाते थे और फिर वापस झारखंड के जंगलों में चले आते थे. ऐसे में हाथियों के झुंड कभी झारखंड के गांवों में नहीं जाया करते थे.

2008 के अंत तक जंगली जानवरों से घायल होने वालों की संख्या 881 रही. इन घायलों को 155.63 लाख रुपये का मुआवजा दिया गया.

मजेदार बात यह है कि झारखंड में विशेषज्ञों का कोई ऐसा दल नहीं है, जो जरूरत पड़ने पर हाथियों के झुंड को भगा सके.

इस काम के लिए झारखंड का वन विभाग पूरी तरह से पश्चिम बंगाल पर आश्रित है. दुमका और गोड्डा के वन अधिकारियों की मानें, तो एक गांव के लोग हाथियों को भगाते हैं, तो हाथियों का झुंड दूसरे गांव में घुस जाता है. फिर वहां से भगाया जाता है, तो झुंड किसी और गांव में घुस कर तबाही मचाता है. *(सीएसई मीडिया फैलोशिप के तहत तैयार शोध आलेख)*